Q→ लाइबनित्ज के मन तथा शरीर के संबंध की व्याख्या करें?

Ans→ लाइबनित्ज ने घड़ी का उदाहरण देते हुए मन तथा शरीर सम्बन्ध की व्याख्या की तथा ईश्वर को एक घड़ी साज की संज्ञा दी। इनके अनुसार ईश्वर ने मन तथा शरीर रूपी दो घड़ियाँ बनाई तथा उनमें संगति स्थापित कर दी।

लाइबनित्ज के अनुसार व्यक्ति असंख्य चिद्‌णुओं का समुच्चय है जिनमें चेतना की मात्रा में अन्तर तथा एक तारतम्य पाया जाता है। इन चिद्‌णुओं में एक चिद्‌णु ऐसा होता है जिसमें चेतना की मात्रा अन्य से अधिक होती है। इस चिद्‌णु को ही उन्होंने आत्मा कहा तथा बाकी के चिद्‌णुओं को सामूहिक रूप से शरीर की संज्ञा दी।

शरीर के समस्त चिद्‌णु आत्मा के अधीन कार्य करते हैं। उदाहरणार्थ - आत्मा चिद्‌णु में जब विचार आया खड़े होने का तो शरीर खड़ा हो गया, इसलिए नहीं कि आत्मा ने शरीर को प्रभावित किया, बल्कि इसलिए की ईश्वर ने पहले से ही निश्चित कर दिया था। आत्मा तथा

Teacher's Signature

शरीर के चिदणुओं को बनाते समय कि कब आत्मा में यह विचार आएगा और तब शरीर के चिदणुओं में किस प्रकार का प्रतिबिम्ब पैदा होगा। इसे ही पूर्व स्थापित सामंजस्य संगति कहते हैं।

लाइबनित्ज के अनुसार आत्मा तथा शरीर में अटूट सम्बन्ध पाया जाता है, क्योंकि आत्मा के बिना शरीर और शरीर के बिना आत्मा की कल्पना नही की जा सकती।

जहाँ डेकार्ट ने आत्मा तथा शरीर को दो भिन्न तथा स्वतन्त्र द्रव्य मानकर उनके मध्य क्रिया प्रतिक्रिया की स्थापनी की, वहीं स्पिनोज़ा ने आत्मा तथा शरीर को दो भिन्न द्रव्य न मानकर एक ही द्रव्य के दो गुणों के रूप में स्वीकार करके इनकी दो समान्तर धाराओं का प्रतिपादन किया, जबकि लाइबनित्ज ने आत्मा तथा शरीर की समस्या का समाधान करने के लिए आत्मा तथा शरीर को दो भिन्न द्रव्यों के रूप में स्वीकार न करके इन्हे एक ही चैतन्य की जाग्रत तथा सुप्त दो अवस्थाएँ कहा तथा

बताया कि जब ईश्वर ने आत्मा तथा शरीर के चिद्‌णुओं को उत्पन्न किया तो उसने एक प्रकार का सामंजस्य भर दिया जिसके कारण दोनों परस्पर स्वतन्त्र रूप से कार्य करते हैं तथा उनके कार्यों में अनुरूपता पाई जाती है; जैसे - सदाचारी लोग दुःखी हैं, दुराचारी लोग सुखी हैं, असंगति है। और यदि संगति है भी तो हमारी पारस्परिक क्रिया-प्रतिक्रिया के कारण है, प्रयत्नों के कारण है न कि ईश्वर ने चिद्‌णुओं को उत्पन्न करते समय ही संगति स्थापित कर दी थी।

- लाइबनित्ज पर अहंमात्रवादी होने पर आरोप लगाया जाता है।

- पूर्व स्थापित सामंजस्य को मानने पर संकल्प स्वातन्त्र्य तथा नैतिकता पर प्रश्न चिन्ह लगता है

- यदि चिद्‌णु गवाक्षहीन हैं तो फिर यह कहने का कोई औचित्य नहीं है कि चिद्‌णु अन्य दशाओं को प्रतिबिम्ब करते हैं।